''सरस्वतीवन्दना''

वर दे ! वीणावादिनी वर दे।।टेक।।

प्रिय स्वतन्त्र रव, अमृत मन्त्र नव,
भारत में भर दे।।१।।

काट अन्ध उर के बन्धन स्तर
बहा जननी ज्योतिर्मय निर्झर,
कलूषभेद तम हर प्रकाश भर
जग मग जग कर दे ।।२।।

नव गति नव लय ताल छन्द नव
नवल कण्ठ भव जलद मन्द्र रव,
नव नभ के नव विहग वृन्द को
नव पर नव स्वर दे।।३।।

''सरस्वतीवन्दना''

वर दे ! वीणावादिनी वर दे।।टेक।।

प्रिय स्वतन्त्र रव, अमृत मन्त्र नव,
भारत में भर दे।।१।।

काट अन्ध उर के बन्धन स्तर
बहा जननी ज्योतिर्मय निर्झर,
कलूषभेद तम हर प्रकाश भर
जग मग जग कर दे ।।२।।

नव गति नव लय ताल छन्द नव
नवल कण्ठ भव जलद मन्द्र रव,
नव नभ के नव विहग वृन्द को
नव पर नव स्वर दे।।३।।

''सरस्वतीवन्दना''

वर दे ! वीणावादिनी वर दे।।टेक।।

प्रिय स्वतन्त्र रव, अमृत मन्त्र नव,
भारत में भर दे।।१।।

काट अन्ध उर के बन्धन स्तर
बहा जननी ज्योतिर्मय निर्झर,
कलूषभेद तम हर प्रकाश भर
जग मग जग कर दे ।।२।।

नव गति नव लय ताल छन्द नव
नवल कण्ठ भव जलद मन्द्र रव,
नव नभ के नव विहग वृन्द को
नव पर नव स्वर दे।।३।।

''सरस्वतीवन्दना''

वर दे ! वीणावादिनी वर दे।।टेक।।

प्रिय स्वतन्त्र रव, अमृत मन्त्र नव,
भारत में भर दे।।१।।

काट अन्ध उर के बन्धन स्तर
बहा जननी ज्योतिर्मय निर्झर,
कलूषभेद तम हर प्रकाश भर
जग मग जग कर दे ।।२।।

नव गति नव लय ताल छन्द नव
नवल कण्ठ भव जलद मन्द्र रव,
नव नभ के नव विहग वृन्द को
नव पर नव स्वर दे।।३।।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM